International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 275-276

राजभाषा हिन्दी और कंप्यूटर

किरण मयी

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, आर. जे. आर. डिग्री कॉलेज, महेंद्रगढ़, हरियाणा, भारत।

सारांश

आज का युग सूचना, संचार और विचार का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी उपकरणों के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया एवं संप्रेषण करता है। सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में कंप्यूटर का महत्व एक कल्प वृक्ष से कम नहीं है जिससे व्यवसायिक, वाणिज्यिक, जनसंचार, शिक्षा, चिकित्सा आदि कई क्षेत्र लाभान्वित हुए है।

कंप्यूटर और सूचना टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में आज जो नया विस्फोट हुआ है। वह भाषा में भी एक मौन क्रांति का वाहक बनकर आया है। अभी तक भाषा को मनुष्य की आवश्यकताओ को पूरा करना पड़ता था लेकिन आज इसे न केवल मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ रहा है, बल्कि मशीन और कंप्यूटर की नित नई भाषाई मांगों को पूरा करना पड़ रहा है।

मुख्य शब्द: व्यवसायिक, वाणिज्यिक, आत्मसात, प्रयोक्तओं, संप्रेषण, प्रौद्योगिकी, लिप्यंतरण।

प्रस्तावना

हिन्दी विश्व की तीन सबसे बडी भाषाओं में से एक है। लगभग एक करोड़ बीस लाख भारतीय मूल के लोग विश्व के 132 देशों में बिखरे हुए है जिनमें आधे से अधिक हिन्दी भाषा को व्यवहार में लाते हैं। गत पचास वर्षो में हिन्दी की शब्द–संपदा का जितना विस्तार हुआ है उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा में पठन और प्रचार–प्रसार का कार्य हो रहा है। दूर संचार माध्यमों, फिल्मों, गीतों हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं आदि ने भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अपनी अहम भूमिका अदा की है। तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का वर्चस्व तेजी से बढ़ रहा है। हिन्दी का व्यापक प्रयोग जनसंचार माध्यमों की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है।

हिन्दी का वैश्विक स्तर पर प्रभाव का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि विश्व की लगभग सभी भाषाओं के शब्दों को हिन्दी ने आत्मसात कर लिया है। हिन्दी का शब्दकोष विश्व की सभी भाषाओं से बड़ा है कुछ भाषाएं ऐसी है जिनका शब्दकोष बहुत छोटा होने के कारण एक ही शब्द के कई अर्थ निकलते है जबकि हिन्दी के साथ ऐसा नहीं है। वर्तमान में हिन्दी भाषी लोग संसार के हर कोने में मौजूद है और वे लोग हिन्दी का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं।

राजभाषा हिन्दी और कंप्यूटर

आज टेकनॉलॉजी की भाषा को आम आदमी के नजदीक पहुँचाने की आवश्यकता बढ़ गई है। मुक्त बाजार और वैश्वीकरण के दबावों ने हिन्दी की जरूरत और मांग के अनुकूल ढालने में भूमिका निभाई है। विश्व में अब उसी भाषा को प्रधानता मिलेगी जिसका व्याकरण संगत होगा, जिसकी लिपि कंप्यूटर की लिपि होगी।

चूँकि हिन्दी भाषा का व्याकरण वैज्ञानिक आधार पर बना है इसलिए देवनागरी लिपि कंप्यूटर यंत्र की प्रकिया के अनुकूल है। इसमें विश्व की किसी भी भाषा एवं ध्वनि का लिप्यांकन किया जा सकता है। कंप्यूटर युग में हिन्दी सॉफ्टवेयर और ज्यादा विकसित करने की आवश्यकता है। हिन्दी में भी कंप्यूटर शब्दावली के निर्माण में हमें मार्केट और प्रयोक्ता को ध्यान में रखना होगा। जहाँ आवश्यक हो अति प्रचलित अंग्रेजी शब्दों को उसी रूप में ग्रहण करना होगा जैसा हम बोलते समय करते हैं। आज कंप्यूटर की शब्दावली गढ़ने के बजाय उसे मार्केट करने की अधिक जरूरत है जिससे हिन्दी में रचित कंम्यूटर साहित्य और सॉफ्टवेयर सामान्य प्रयोक्ताओं को बोध गया हो सके और मार्केट में स्वीकार्य हो सके। यदि इस सूचना युग में हिन्दी कंप्यूट्रीकरण में पिछड़ गई, तो विश्व स्तर पर हो रही भाषाई दौड़ में हिन्दी बहुत पीछे छूट जाएगी।

कंप्यूटर में हिन्दी प्रयोग की बढ़ती संभावनाओ को ध्यान में रखकर इलेक्ट्रॉनिक विभाग मे भारतीय भाषाओं के लिए टेक्नॉलॉजी विकास नामक परियोजना के अंतर्गत कई प्रोजेक्ट शुरू किए है। इस प्रयास में आई.आई.टी, कानपुर और सी–डैक की भूकिमा प्रमुख थी। आज विंडोज प्लेटफार्म में काम करने वाले अनेक हिन्दी सॉफ्टवेयर मार्केट में उपलब्ध है, जैसेः– सी डैक का इज्म ऑफिस, लीप ऑफिस, अक्षर फार विंडोज, सुविंडोज और आकृति आदि। हाल ही में युनिकोड फान्ट के प्लेफार्म पर विकसित माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस हिन्दी में स्क्रीन का समस्त परिवेश जैसे कमान, संदेश, फाइल नाम आदि भी हिन्दी में उपलब्ध है।

सूचना प्रौद्योगिकी के तहत मशीनी अनुवाद एवं लिप्यंतरण सहज एवं सरल हो गया है। सी–डैक पुणे ने सरकारी कार्यालयों के लिए अंग्रेजी–हिन्दी में पारस्पारिक कार्यालयीन सामग्री का अनुवाद करने हेतु मशीन असिस्टेड ट्रांसलेशन मंत्रा पैकेज विकसित किया है। हिन्दी भाषा में वेबपेज विकसित करने हेतु प्लग इन पैकेज तैयार किया गया है जिससे कोई भी व्यक्ति, संस्था, अपने वेबपेज हिन्दी में प्रकाशित कर सकता है। अब वर्तमान स्थिति में वेबसाइट पर हिन्दी में इलेक्ट्रानिक शब्दकोश उपलब्ध है। इसी तरह अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओ में पारस्पारिक अनुवाद प्राप्त करने की सुविधा भी उपलब्ध है। कंप्यूटर एवं इंटरनेट के सहारे शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से होने की संभावना बढ़ गई है। सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी भाषा का प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ रहा है। माइक्रोसॉफ्ट, याहू, रेडिफ, गूगल आदि विदेशी कंपनियो ने अपनी वेबसाइट पर हिन्दी भाषा को स्थान दिया है।

भारत सरकार के नेशनल सेंटर फार सॉफ्टवेयर टेक्नॉलॉजी इंस्टीटयूट ने सभी भारतीय भाषाओ की लिपि को कम्पयूटर पर स्थापित करने के लिए विशेष अभियान चलाया है, अमेरिकन माइक्रोसाफ्ट कंपनी ने एन सी एस टी के साथ संयुक्त योजना के तहत विश्व प्रसिद्ध विंडोज प्रणाली पर भारतीय भाषाओं को विकसति करने का कार्य शुरू किया है।

इंटरनेट सेवा के अंतर्गत ई–मेल, चेटिंग, वायसमेल, ई–ग्रीटिगं आदि बहुउपयोगी क्षेत्र में हिन्दी भाषा का विकास एवं संप्रेषण की संभावनाएं अधिक है। कंप्यूटर पर हिन्दी भाषा ध्वनि, चित्र, एनीमेशन के सहारे विकसति की जा रही है। कई इंटरनेट साइट में
मुख्य भारतीय–भाषाओं के लिए उपयुक्त संपर्क सूत्र– मेल, सॉफ्टवेयर आदि जानकारी उपलब्ध है।
जैसेः– www.rajbhasa.com, www.indianlanguages.com, www.hindinet.com आदि
भारतीय–भाषाओ को विकसति करने हेतू सी–डैक मुंबई में इंडियन लैंग्वेज रिर्सोसेस सेंटर के तहत कंप्यूटर के क्षेत्र में अनुसंधान जारी है। आधुनिकतम विकसित रफ्तार डॉट इन, भाषा इन्डिया डाट काम जैसे अद्भूत कार्य हिन्दी भाषा को अत्यन्त मजबूत व सक्षम बनाने में सहयोगी है। की–बोर्ड व मॉनीटर संलग्न रफ्तार डॉट काम, भारत का पहला इन्टिग्रेटिड हिन्दी सर्च इंजन बना। अब तक हिन्दी भाषा शब्दों का विशाल भंडार हिन्दी वर्ड नेट पर विकसित किया गया है। इससे हिन्दी भाषा को विश्व की प्रमुख भाषाओं के साथ जोड़ा जाएगा।

निष्कर्ष

हालांकि हिन्दी में कंप्यूटर शब्दावली के निर्माण में प्रयास किए जा रहे है फिर भी अभी भी हिन्दी तकनीकी दृष्टि से पूरी तरह विकसित नही है। विश्व स्तर के कई साफ्टवेयर में अभी तक हिन्दी का समावेश नही किया गया है।
आज इंटरनेट की 83 प्रतिशत सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध है। भारत के लिए आवश्यक है कि इंटरनेट की प्रौद्योगिकी को हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में विकसित करें।

संदर्भ ग्रन्थ

1. इंटरनेट
2. समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ
3. डा0 अशोक तिवारी (प्रतियोगिता साहित्य)